सिर्फ पढ़ने के लिए-

एक पैर पर

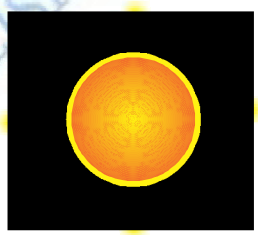

जब से जन्म लिया है मैंने,
एक पैर पर खड़ा हुआ हूँ,
आँधी-पानी, गरमी-सर्दी,
झेल-झेलकर बड़ा हुआ हूँ ।

सर पर सहता धूप, मगर मैं
औरों को देता छाया हूँ,
साँस आखिरी तक परहित में,
रखता रत अपनी काया हूँ ।

देह सूख जाती जब मेरी,
तब भी अंग-अंग कट-चिर कर,
आता काम सभी के हूँ मैं
भले राख हो जाउँ जलकर ।

लेकिन कहता नहीं कभी कुछ,
रहता आया सदा मौन हूँ ।
जड़ मेरी रहती धरती में,
बतलाओ तुम मुझे, कौन हूँ?

-द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

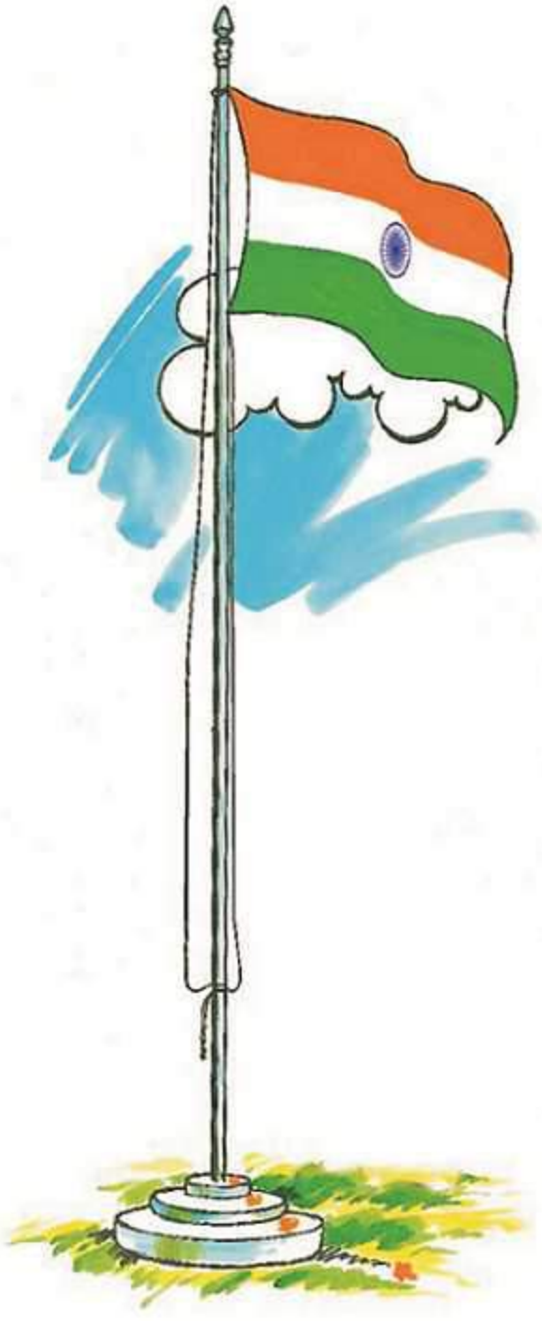

राष्ट्र-गान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
पंजाब सिंध गुजरात मराठा,
द्राविड़ - उत्कल - बंग।
विंध्य - हिमाचल - यमुना-गंगा,
उच्छल - जलधि - तरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे
गाहे तव जय गाथा।
जन-गण-मंगलदायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।

सत्र 2019-20

किसलय, भाग-1, कक्षा-6 (हिन्दी)

बिहार स्टेट टेक्स्ट बुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

मुद्रक : तुलिका प्रिन्टर्स, संदलपुर, पटना-800006